पुत्र का बपतिस्मा

एँडी क्लोर

बपतिस्मा पूरी तरह से नये नियम की एक रीति है।[1] यूहन्ना द्वारा दिया जाने वाला बपतिस्मा यहूदियों के लिए मन फिराने और पापों की क्षमा को स्वीकार करने की एक पुकार था। यीशु के जन्म की तरह, उसका बपतिस्मा भी अपवाद था। यह नियम से हटकर था।

यीशु जब तीस वर्ष का हुआ था (लूका 3:23),[2] तो यूहन्ना का बपतिस्मा लेने के लिए (नासरत से; मरकुस 1:9) बैतनिय्याह (यूहन्ना 1:28)[3] तक साठ मील गया था।[4] यूहन्ना की बातें सुनने और उससे बपतिस्मा लेने के लिए वह हज़ारों लोगों में शामिल हो गया था। शायद यरदन नदी में बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास लोगों की लम्बी कतार लगी रहती थी। यूहन्ना ने आंख उठाकर देखा तो बपतिस्मा लेने वाला अगला आदमी यीशु था। यह देखकर वह हैरान रह गया और झिझकने लगा, परन्तु उसने उसे बपतिस्मा दे दिया। उसके बपतिस्मे का दृश्य निर्णायक ढंग से परमेश्वरत्व की तस्वीर को दिखाता है: स्वर्ग से परमेश्वर ने बात की, यीशु ने बपतिस्मा लिया और आत्मा कबूतर के रूप में उतरा।

आत्मा ने यीशु के बपतिस्मे के हमें तीन वृत्तांत दिए हैं, जिनमें मत्ती का वृत्तांत विस्तार में है:

> उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, अभी तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। उस ने उसकी बात मान ली। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी से ऊपर आया, और देखो, उस के लिए आकाश खुल गया, और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और यह आकाशवाणी हुई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21, 22)।

यह बपतिस्मा उन चार स्मरणीय घटनाओं में से पहली घटना है जिनसे यीशु के सार्वजनिक कार्य की भूमिका बनती है। यीशु के बपतिस्मे के समय, 18 वर्षों की चुप्पी टूटी थी। दूसरा, आत्मा उस पर कबूतर के रूप में उतरा था (मत्ती 3:16)। यह स्पष्टत: वह क्षण था जब यीशु ने बिना माप के पवित्र आत्मा पाया था (लूका 3:22; 4:1; 1:15)। तीसरा, यीशु को पिता

की ओर से स्वीकार किया गया था (मत्ती 3:17)। पिता ने कहा था कि यीशु उसका पुत्र है और वह उससे प्रसन्न है। चौथा, जंगल में शैतान द्वारा यीशु की परीक्षा ली गई थी (मत्ती 4:1-11)। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लिखा है, ''उसके लिए परीक्षा आवश्यक हो गई, ताकि इस प्रकार हमारे निर्बल स्वभाव और परीक्षा में सहभागी होकर वह हमें अपने स्वभाव के साथ सामर्थ और पाप रहित होने में सहभागी बनाए।''[5]

मसायाह का मार्ग तैयार करने के लिए यूहन्ना परमेश्वर का भेजा हुआ भविष्यवक्ता था। पुराने और नये नियम के बीच की कड़ी को जोड़ने वाले के रूप में उसका दोहरा मिशन था: (1) मसीह और उसके राज्य के आने के लिए लोगों (यहूदियों) को तैयार करना और (2) मसायाह को पहचानना (यूहन्ना 1:23, 31-34)।

यूहन्ना का बपतिस्मा क्या था?

यूहन्ना का बपतिस्मा आशा का बपतिस्मा था। यह यीशु के आने की ओर आगे को देखता था (प्रेरितों 19:4)। यूहन्ना का बपतिस्मा लेने वाले लोग प्रतिज्ञा करते थे कि वे मसीह के आने पर उसे स्वीकार करेंगे। यूहन्ना अपने लिए नहीं बल्कि मसायाह के लिए चेले बना रहा था (मत्ती 3:11)।

यूहन्ना का बपतिस्मा मन फिराव का बपतिस्मा भी था (प्रेरितों 19:4)। उसके बपतिस्मे का सामान्य उद्देश्य लोगों का मन फिराव करना था। यूहन्ना ने लोगों का मन धर्म की ओर मोड़कर प्रभु के लिए मार्ग तैयार किया। यह एक नए प्रकार का मन फिराव था। इससे पहले, मन फिराव सांसारिक आशिषों को पाने के लिए करवाया जाता था; जिस मन फिराव का यूहन्ना ने प्रचार किया था वह लोगों को आने वाले मसायाह और उसके राज्य को ध्यान में रखकर पश्चात्ताप करना था।

फिर, यह बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए था (मरकुस 1:4)। यह बपतिस्मा अर्थात पापों की क्षमा के निमित्त पानी का बपतिस्मा ही एकमात्र बपतिस्मा है जिसकी नये नियम में आज्ञा दी गई है। यीशु का लहू आगे की ओर जाने के अलावा पीछे तक भी गया है।

यूहन्ना का बपतिस्मा आज्ञाकारिता का बपतिस्मा भी था (लूका 7:30)। यूहन्ना के बपतिस्मे को ठुकराकर लोगों ने परमेश्वर की युक्ति को ठुकराया था। उसका बपतिस्मा परमेश्वर की धार्मिकता का एक भाग था।

यीशु ने यूहन्ना से बपतिस्मा क्यों लिया था?

एक नकारात्मक विचार

उन कारणों की खोज करते हुए कि यीशु ने बपतिस्मा क्यों लिया था, आइए पहले नकारात्मक पक्ष को देखते हैं। यीशु को मन फिराने की आवश्यकता नहीं थी। पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान वह पाप रहित ही रहा था। इब्रानियों 4:15 कहता है, ''क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन वह

सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला।'' वह पूर्णतया धर्मी था और इससे अधिक धर्मी नहीं हो सकता था।

दूसरा, यीशु को पापों की क्षमा की आवश्यकता नहीं थी। ''पापों की क्षमा'' का अर्थ है पाप का दोष, कभी पाप न करने के कारण यीशु में ऐसा कोई दोष नहीं था जिसे दूर करने की आवश्यकता हो।

तीसरा, उसने महायाजक के पद पर बैठने के लिए बपतिस्मा नहीं लिया था। पृथ्वी पर रहते समय वह याजक नहीं था। उसके मामले में परमेश्वर ने अपवाद रखा और उसे स्वर्ग में हमारा महायाजक बनाया।

चौथा, उसने परमेश्वर को अपने ऊपर लाने के लिए बपतिस्मा नहीं लिया था। वह तो आदि से ही परमेश्वर था (मत्ती 1:23)। बपतिस्मा लेने से वह ईश्वरीय नहीं बना था।

सकारात्मक विचार

आइए अब यीशु के बपतिस्मे पर सकारात्मक पहलू से नज़र डालते हैं। यीशु ने विशेष रूप से बताया कि उसने यूहन्ना का बपतिस्मा क्यों लिया था। उसने ''सब धार्मिकता को पूरा करने'' (मत्ती 3:15) के लिए बपतिस्मा लिया था। उसका बपतिस्मा किसी बात को पूरा करने के लिए था। यूहन्ना से बपतिस्मा लेकर परमेश्वर की धार्मिकता पूरी होनी थी। ''धार्मिकता'' को ''परमेश्वर की सभी आज्ञाओं के अनुसार चलने'' के बराबर माना जाना चाहिए। हम पढ़ते हैं, ''... तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं'' (भजन 119:172); और ''और वे दोनों परमेश्वर के साम्हने धर्मी थे: और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलने वाले थे'' (लूका 1:6)। बाद में यीशु ने पूछा था, ''यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था?'' (मत्ती 21:25)। परमेश्वर की इच्छा थी कि यीशु यूहन्ना से बपतिस्मा ले (यूहन्ना 6:38)। इसलिए, यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर, वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर रहा था।

यद्यपि अपने बपतिस्मे के विषय में यीशु द्वारा दिया गया कारण ही सुसमाचार की पुस्तकों में मिलने वाला एकमात्र विशेष कारण है, परन्तु उसके बपतिस्मे के कई महत्वपूर्ण संकेत थे। पहला, इसका अर्थ *अनुमोदन* था। उसके बपतिस्मे ने यूहन्ना के काम और उसके संदेश को स्वीकृति दे दी, कि वह परमेश्वर का एक भविष्यवक्ता था। यूहन्ना द्वारा यीशु का बपतिस्मा लेने से यह स्पष्ट हुआ कि यूहन्ना का बपतिस्मा परमेश्वर की ओर से था। इससे यूहन्ना के बपतिस्मे के उद्देश्य के बारे में भी कुछ पता चला। उसका बपतिस्मा उस युग के लिए परमेश्वर की योजना का भाग था जो मसीह की सार्वजनिक सेवकाई से पहले था।

यीशु के बपतिस्मे का दूसरा, अर्थ *प्रारम्भ* है। बपतिस्मा लेने पर, यीशु को मसायाह माना गया था। कबूतर के रूप में, पवित्र आत्मा उसके बपतिस्मा लेने के बाद उस पर उतरा था। इसके बाद, यूहन्ना उसे मसायाह के रूप में पहचान सका था। (यूहन्ना 1:32-34; 1:35, 36)। यीशु के बपतिस्मे के समय, पिता द्वारा उसका अंगीकार किया गया था। नासरत में उसका शांत जीवन अब वैसे ही नहीं रहना था। बपतिस्मा लेकर ''यीशु'' जंगल में चला

गया ताकि उसकी परीक्षा हो और परीक्षा देकर, वह अपनी सार्वजनिक सेवा में चला गया।

यीशु के बपतिस्मे से हमें क्या सबक मिलते हैं?

यीशु के बपतिस्मा लेने से हमें यूहन्ना का बपतिस्मा लेने की शिक्षा नहीं मिलती है। बहुत से लोगों का कहना है, ''मैं तो वैसे ही बपतिस्मा लूंगा जैसे यीशु ने लिया था।'' निश्चय ही, ''यीशु की तरह'' बपतिस्मा लेना तो असम्भव होगा। यूहन्ना का बपतिस्मा एक विशेष समय और विशेष लोगों के लिए था। उसका बपतिस्मा अब प्रचलन में नहीं है (प्रेरितों 19:1-5)। यीशु ने, जो पाप रहित है, बपतिस्मा केवल सभी धार्मिकताओं को पूरा करने के लिए लिया था। यीशु व्यवस्था को इसलिए मानता था क्योंकि वह व्यवस्था के अधीन था। उसे परमेश्वर का आज्ञाकारी होने के लिए, व्यवस्था को मानना आवश्यक था। परन्तु आज हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा व्यवस्था के अनुसार चलना नहीं है। आज हम यूहन्ना का बपतिस्मा नहीं ले सकते हैं, परन्तु जिन कारणों से यीशु ने परमेश्वर की आज्ञा मानी, हम भी उसकी आज्ञा मान सकते हैं। हमें पूछना चाहिए, ''आज मेरे लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है, कि मैं इसे वैसे ही पूरा कर सकूं जैसे यीशु ने अपने लिए अपने पिता की आज्ञा को पूरा किया था?''

उसके बपतिस्मे से हमें आज्ञाकारिता का सबक अवश्य मिलता है।[6] उसके पिता की यह इच्छा थी कि वह यूहन्ना का बपतिस्मा ले। यीशु ने प्रसन्नतापूर्वक यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था क्योंकि यह उसके पिता की इच्छा थी। जब तक कोई परमेश्वर की इच्छा के सामने समर्पण नहीं करता तब तक वह यीशु के पीछे चलने का दावा नहीं कर सकता है। भावुक होने का अर्थ समर्पण नहीं होता। यदि हमने ग्रेट कमीशन अर्थात मुर्दों में से जी उठने के बाद दी गई प्रभु की आज्ञा के बपतिस्मे को नहीं माना है, तो हमने परमेश्वर की बात नहीं मानी है (मत्ती 28:19, 20)।

यीशु के बपतिस्मा में से हमें दीनता का सबक भी मिलता है। पापी ने पाप रहित को बपतिस्मा दिया था। निम्न अधिकारी ने अपने उच्च अधिकारी को बपतिस्मा दिया था (मत्ती 3:13-17)। दीनता का अर्थ है ''अपने से बड़ी किसी वस्तु में अपने आपको खोना।'' अपनी प्रतिष्ठा से अधिक यीशु अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के प्रति चिन्तित था। यीशु ने आज्ञा मानना सीखा (इब्रानियों 5:8, 9)।

इसके अलावा, उसका बपतिस्मा हमें सिखाता है कि आज्ञा मानना हमारे पिता को अच्छा लगता है। उसके बपतिस्मा लेने के बाद पिता ने यीशु को लोगों के सामने अपना इकलौता पुत्र स्वीकार किया था। उसने न केवल यह कहा कि वह उससे प्रसन्न है, बल्कि यह भी कहा कि वह उससे अत्यन्त प्रसन्न है। हम अपने पिता को कैसे प्रसन्न करते हैं। स्पष्ट उत्तर है कि हम उसे आज्ञा मानने से प्रसन्न करते हैं। पवित्र शास्त्र तीन बार परमेश्वर को यीशु मसीह की गवाही के लिए स्वर्ग से बोलते हुए दिखाता है: उसके बपतिस्मे के समय, रूपान्तरण के अवसर पर (मत्ती 17:5), और यूहन्ना 12:28-30 में।

यीशु के पदचिह्नों पर चलने का क्या अर्थ है?

यीशु अपने पिता की इच्छा पूरी करने आया था। यीशु के लिए परमेश्वर की इच्छा का अर्थ बपतिस्मा, परीक्षा और क्रूस था। हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा का अर्थ क्या है? इसका अर्थ एक बात में ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा है (मरकुस 16:15)। यीशु ने हमें परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का निमन्त्रण दिया और दिखाया कि उसे कैसे पूरा किया जा सकता है। यीशु के पदचिह्नों पर चलने का अर्थ परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है। यदि यीशु यूहन्ना के बपतिस्मे के बारे में इतना गम्भीर था, तो उससे भी बड़े बपतिस्मे को लेने के लिए अर्थात ग्रेट कमीशन के बपतिस्मे के प्रति हमें कितना गम्भीर होना चाहिए?[7]

पाद टिप्पणियां

[1]''धर्मान्तरण का बपतिस्मा उन्हें जो यहूदी नहीं थे यहूदी मत में लाने के लिए था, परन्तु पापों की क्षमा के साथ इसका कोई सम्बन्ध नहीं था। यूहन्ना का बपतिस्मा उनके लिए था जो पहले से यहूदी थे और यह उन्हें विश्वास में नहीं लाता था। गवाहों की उपस्थिति में धर्मान्तरण करने वाला स्वयं को डुबोता था; यूहन्ना के बपतिस्मे में बपतिस्मा देने वाले का होना आवश्यक था। धर्मान्तरण का बपतिस्मा पुराने नियम की रीति नहीं हो सकती है, परन्तु निश्चित नहीं है कि यह बपतिस्मा यहून्ना के समय से पहले दिया जा रहा था। इस रीति के बारे में फीलो और जोसेफस चुप हैं और इसके लिए हमारा प्रारम्भिक प्रमाण 70ईस्वी में यरूशलेम के विनाश के समय के बारे में शम्माई और हिलेल के विद्यालयों में विवाद है (पासओवर 8:8)। उस समय की यह एक रीति लगती है, परन्तु इसके प्रारम्भ के बारे में अस्पष्टता पाई जाती है।'' (जैक पी. लुईस, द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू, पार्ट 1, लिविंग वर्ड कमैन्ट्री, सं. एवरट फर्ग्यूसन [आस्टिन, टैक्स.: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976], 62)। [2]निश्चय ही किसी को इससे यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि बपतिस्मा लेने के लिए तीस वर्ष की आयु होने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। यीशु बारह वर्ष की आयु में परमेश्वर की इच्छा के प्रति संवेदनशील था (लूका 2:41-49)। यदि यीशु अपना काम जल्दी आरम्भ कर देता, तो उसने जल्दी बपतिस्मा ले लेना था। [3]हिन्दी की बाइबल में जहां बैतनिय्याह है वहीं RSV में इसे Bethany और KJV में Bethabara अनुवाद किया गया है। [4]नये नियम में सात बपतिस्मों का उल्लेख है: (1) मूसा का बपतिस्मा (1 कुरिन्थियों 10:2); (2) दुखों का बपतिस्मा (मरकुस 10:38, 39); (3) मुर्दों के लिए बपतिस्मा (1 कुरिन्थियों 15:29); (4) पवित्र आत्मा का बपतिस्मा (मत्ती 3:11); (5) आग का बपतिस्मा (मत्ती 3:11); (6) यूहन्ना का बपतिस्मा (प्रेरितों 19:3); और (7) ग्रेट कमीशन का अर्थात प्रभु की आज्ञा के अनुसार बपतिस्मा (मरकुस 16:15, 16; मत्ती 28:19, 20)। [5]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे और फिलिप्प वाई. पैन्डलटन, द फोरफोल्ड गॉस्पल। (सिनसिनटी, ओहियो.: द स्टैंडर्ड पब्लिकेशन, पृ. न.), 88. [6]हमारे बपतिस्मे और यीशु के बपतिस्मे में समानता बनाई जा सकती है: (1) उसने बपतिस्मे के समय आत्मा पाया और हम भी पाते हैं (प्रेरितों 2:38); (2) उसने अपने बपतिस्मे के समय प्रार्थना की, और हमें भी प्रार्थनापूर्वक बपतिस्मा लेना चाहिए (प्रेरितों 22:16); (3) बपतिस्मे के बाद उसे पुत्र के रूप में माना गया और बपतिस्मे के समय वास्तव में हमें परमेश्वर के पुत्र बनाया जाता है (गलतियों 3:26, 27)। [7]ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा यूहन्ना के बपतिस्मे से अधिक देर तक रहने वाला है। यूहन्ना का बपतिस्मा केवल थोड़े से समय के लिए था; ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा मसीही युग के लिए है। यूहन्ना का बपतिस्मा यूहन्ना द्वारा दिया जाता था; ग्रेट कमीशन का बपतिस्मा पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से दिया जाता था (मत्ती 28:19, 20)। ग्रेट कमीशन के बपतिस्मे का उल्लेख सात ''एकों'' में है (इफिसियों 4:4-6), जबकि यूहन्ना के बपतिस्मे का नहीं।